हिंदी विश्व

11वें विश्व हिंदी सम्मेलन पर केंद्रित दैनिक समाचार पत्र

11वां विश्व हिंदी सम्मेलन
मॉरीशस, 18-20 अगस्त, 2018

गोस्वामी तुलसीदास नगर, मॉरीशस | सोमवार, 20 अगस्त 2018 | अंक - 3

रविवार को महात्मा गांधी संस्थान में पाणिनि भाषा प्रयोगशाला का उद्घाटन करतीं भारत की विदेश मंत्री सुषमा स्वराज

महात्मा गांधी संस्थान में पाणिनि भाषा प्रयोगशाला

आज दिनांक 19 अगस्त 2018 को विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने महात्मा गांधी संस्थान में मॉरीशस की शिक्षा मंत्री लीला देवी दुकन-लछुमन और कला एवम् संस्कृति मंत्री पृथ्वीराज सिंह रुपन की उपस्थिति में पाणिनि भाषा प्रयोगशाला का उद्घाटन किया। पाणिनि भाषा प्रयोगशाला की स्थापना 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन के उपलक्ष्य में विदेश मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से की गयी है, जिसमें 34 कंप्यूटरों के साथ-साथ भाषा प्रयोगशाला से सम्बंधित अन्य संसाधन भी प्रदान किए गए हैं। इस प्रयोगशाला में, भारत से आए तकनीकी विशेषज्ञों द्वारा हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के अधुनातन सॉफ्टवेयर लगाए गए हैं जिसके द्वारा प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्चस्तरीय विद्यार्थियों को शिक्षण की नवीन प्रविधियों के माध्यम से भाषा अधिगम के चारों कौशलों को सुगम एव वैज्ञानिक तरीके से सिखाया जा सकेगा। इस उद्घाटन समारोह में सुषमा स्वराज ने संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि मॉरीशस में हिन्दी भाषा को बहुत संजोकर रखा गया है। उन्होंने अत्यंत प्रसन्नता और गर्व के भाव से कहा कि मॉरीशस में हिंदी का भविष्य पूरी तरह सुरक्षित है।

डायस्पोरा संस्कृति को मिले प्राथमिकता : अनिरुद्ध जगन्नाथ

डॉ. राजीव रंजन राय की रपट

गोस्वामी तुलसीदास नगर, 19 अगस्त। 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन का सातवाँ समानान्तर सत्र 'प्रवासी संसार : भाषा और संस्कृति' विषय पर केंद्रित है। इस सत्र की अध्यक्षता कमल किशोर गोयनका एवं संयोजन नारायण कुमार द्वारा किया गया। सत्र के बीज वक्तव्य में प्रवासी संसार की व्यापकता पर विचार करते हुए प्रेम जनमेजय ने कहा कि प्रवासी देशों में भाषा और संस्कृति पहचान का सबसे सशक्त माध्यम है। बड़े यत्न से सहेजी गई विरासत को आगे बढ़ाने के लिए युवा लोगों में भाषा एवं संस्कृति को अपनाना आवश्यक है, जिसके लिए युवा प्रवासी मैत्री मंचों की स्थापना की जानी चाहिए। मॉरीशस के पूर्व प्रधानमंत्री अनिरुद्ध जगन्नाथ ने कहा कि राजसत्ता को चुनौती देने का कार्य हिंदी भाषा के माध्यम से ही किया जा सका। मॉरीशस की जीवन संस्कृति में रची-बसी भोजपुरी बोली, पूजा-पाठ एवं फिल्मों के माध्यम से हिंदी भाषा आगे बढ़ी है। हिंदी में हस्ताक्षर कर सकने के कारण ही मॉरीशस के नागरिकों को वोट का अधिकार मिल सका। इसी के बल पर कुली संतानों का प्रधानमंत्री बनने तक का सफर पूरा हुआ है। भारतीय भाषाओं ने भारतीय संस्कृति से जुड़े सच्चाई, भाई चारा, अहिंसा एवं दूसरे धर्म तथा संस्कृतियों के प्रति सहिष्णुता की भावना आदि मूल्यों को जीवित बनाए रखा है।

गयाना के हरिशंकर शर्मा ने अपने वक्तव्य में भारतीय संस्कृति में व्याप्त संस्कारों के महत्व पर प्रकाश डाला। हिंदी भाषा और जीवन संस्कृति में संस्कारों के कारण ही आज भारतीय लोग जहाँ बस जाते हैं, वहाँ का मान बढ़ जाता है। त्रिनिदाद के रवि महाराज ने यह विचार रखा कि भाषा एवं संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए उसे स्थानीय संदर्भों एवं जरूरतों के आधार पर प्रचारित-प्रसारित करना चाहिए। यूनाइटेड किंगडम की शैल अग्रवाल ने प्रवासी संसार में भारतीय संस्कृति एवं अपनेपन की कमी को रेखांकित किया। अमेरिका की मृदुल कीर्ति ने भाषा एवं संस्कृति के बिखरे सूत्रों को स्वस्थ मन:स्थिति में जोड़ने की बात कही। फीजी के अनिल जोशी ने संस्कृति, भाषा एवं साहित्य में संस्थागत हस्तक्षेप करने की माँग को रखा। उनके अनुसार प्रतिनिधि प्रवासी रचनाकारों की रचनाओं की आलोचना एवं विवेचना हेतु मानक प्रारूप अपनाया जाना चाहिए। विश्व की अन्य भाषाओं की तरह हिंदी सीखने के लिए ऑनलाइन शिक्षण व्यवस्था की जाए। सिंगापुर की संध्या सिंह ने दक्षिण-पूर्व एशिया में हिंदी भाषा के शिक्षण एवं शिक्षकों के प्रशिक्षण की आवश्यकता पर बल दिया। हरजेंद्र चौधरी ने इस सत्र में कहा कि हिंदी के जीवित रहने के लिए इसे जिंदगी की जरूरतों से जोड़ना अति आवश्यक है। गुलशन सुखलाल ने प्रवासी भाषा एवं साहित्य को समझने के लिए वर्गीकरण से आगे बढ़कर एक सैद्धांतिकी विकसित किए जाने पर बल दिया। इस सत्र में हिंदी भाषा एवं संस्कृति को फ्रेंकोफ़ोन, दक्षिण एशियाई एवं ल्यूसोफोन क्षेत्रों तक विस्तारित किए जाने हेतु विशेष आवश्यकता को भी रेखांकित किया गया। सत्र में कुल इक्कीस वक्ताओं द्वारा प्रवासी संसार में भाषा एवं संस्कृति के विभिन्न पक्षों पर मंतव्य रखे गए।

सिनेमा को प्रामाणिकता की ज़रूरत : प्रसून जोशी

डॉ. अमित राय की रपट

गोस्वामी तुलसीदास नगर, 19 अगस्त। 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन में आज अभिमन्यु अनत सभागार में फिल्मों के माध्यम से भारतीय संस्कृति का संरक्षण विषय पर सत्र का आयोजन हुआ, इस सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध फिल्मकार और सेंसर बोर्ड के चेयरमैन प्रसून जोशी ने की। बीज वक्तव्य देते हुए शशि दुक्खन ने कहा कि संस्कृति को सभी ने अपनी तरह से व्याख्यायित किया है। संस्कृति उतनी ही पुरानी है जितनी मानवता, भारतीय संस्कृति विभिन्न पहलुओं में झलकती है। संस्कृति रहन-सहन आचार व्यवहार से बनती है। इन सबकी छवि भारतीय सिनेमा में देखने को मिलती है। भारतीय सिनेमा अपने संघर्षों में उतार चढ़ाव के 100 वर्ष मना चुका है। आज वर्ष भर में 1000 से भी ज्यादा फिल्में बनती हैं। पहले नायिका की भूमिका पुरुष निभाते थे पर अब स्त्रियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना शुरू कर दिया है। आजकल कई स्त्री प्रधान फिल्में बन रही हैं। फिल्मों ने संस्कृति को लाखों दिलों तक पहुँचाया। फिल्मों के इतिहास की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि फिल्मों ने संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया है। सिनेमा ने दर्शकों के मन को आलोचनात्मक विवेक दिया। फिल्मों ने समाज के सरोकारों को दिखाया है। भाषा को अंतरराष्ट्रीय मान्यता दी है। सामाजिक सरोकार से जुड़ी प्यासा, कागज के फूल, मदर इंडिया ने भारतीय समाज और परिवार का चित्रण किया। उसके बाद मंडी, बाजार आदि फिल्मों ने भारतीय समाज को आगे बढ़ाया। समाज को फिल्मों ने धर्म, भाषा और संस्कृति को सिखाने का काम किया। महाभारत, रामायण, जोधा-अकबर, चाणक्य, रंग दे बसंती, लगान आदि भारतीय संस्कृति की फिल्मों ने राष्ट्रीय अखंडता, भावात्मक एकता का प्रचार किया है। शिक्षा के क्षेत्र में जिन विषयों को कक्षाओं में नहीं पढ़ाया जाता, वे सिनेमा से आये हैं। सिनेमा के बिना सब नीरस है। फिल्मों ने विश्व मंच पर भारत की छवि को बनाया है। सिनेमा आलोचनाओं का शिकार भी हुआ है। स्वस्थ आलोचना ने सिनेमा को विकसित किया है। राष्ट्रीय चेतना की बात में भी सिनेमा कभी पीछे नहीं रहा। फिल्में भाषा, धर्म राजनीति सभी को जोड़ती है। धर्म, भाषा जाति से ऊपर देश प्रेम होता है। भगत सिंह, बार्डर, उपकार, मुल्क, गोल्ड आदि फिल्मों में देश प्रेम को दर्शाया है। मैं उस संस्कृति की वारिस हूँ जिसे विश्व नमन करता है। फिल्में समाज की दृष्टा और सृष्टा होती हैं। यह सत्र परिचर्चा के स्वरूप में रहा, परिचर्चा को आगे बढ़ाते हुए मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री, सत्यपाल सिंह ने कहा कि क्या फिल्मों के माध्यम से संस्कृति को बचाया जा सकता है? संस्कृति का अर्थ है जो संस्कार दे सके। संस्कार जो मिट्टी को सिरेमिक बना सके, जो लोहे को हथियार, जो आदमी को इंसान में बदल दे, वह संस्कृति है। प्रकृति पर विजय प्राप्त करने का नाम सभ्यता है। संस्कृति कभी अलग-अलग नहीं हो सकती। मनुष्यता सभी जगह एक होती है। मैं वैश्विक संस्कृति की बात करता हूँ। जो प्रगति का मार्ग प्रशस्त कर सके वह संस्कृति है। तीनों लोकों के अंदर वेदों की संस्कृति है। जो मुक्ति की ओर जा सके वह संस्कृति है।

प्रसून जोशी ने कहा कि संस्कृति वही है जो मानवता का विकास करे। सिनेमा अपना विचार संस्कृति से लेता है।

एनएसडी की प्रशिक्षिका, वाणी त्रिपाठी ने कहा कि भाषा ऐसे झरने और प्रवाह का नाम है जो

अपने साथ किसी पत्थर, कंकर सभी को लेकर चलता है, उसे संस्कृति कहते हैं। सिनेमा में भारतीय जीवन की संस्कृति ही परिलक्षित होती है। साहित्य समाज का दर्पण है, सिनेमा आज भी जिंदगी का दर्पण है। समकालीन सिनेमा ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक आंदोलन, पक्ष-विपक्ष सभी को समाहित करता है। सिनेमा हमारे देश में धर्म के रूप में देखा जाता है। गोपालदास नीरज को याद करते हुए उन्होंने कहा कि सिनेमा उतना ही चिरंतन है जितना साहित्य। युवा सिनेमा के माध्यम से सभी संघर्षों से जुड़ता है। सिनेमा को खांचे में बाटकर नहीं देखा जा सकता है। सिनेमा को उतना ही समझने की आवश्यकता है जितना अन्य विधाओं को। पुस्तक से सिनेमा अलग होता है, वह बदलेगा ही क्योंकि संस्कृति मेरी श्वास है। हमारी रचनाओं में वह परिलक्षित होती है।

प्रसून जोशी का कहना था कि सिनेमा पर ऐसा आरोप लगता रहा है कि अतीत का सिनेमा ज्यादा प्रमाणिक हुआ, धीर धीरे आज के सिनेमा में सांस्कृतिक रूप से प्रमाणिकता की कमी आई है, इसमें कुछ सच्चाई है पर उसके कारण हैं। सिनेमा जब आया तब चमत्कृत माध्यम के रूप में था। पुस्तक में पढ़ता व्यक्ति बीच-बीच में रुकता है, चिंतन करता है। पाठक और किताब के बीच एक तरह का लेन-देन चलता रहता है, लेकिन जो व्यक्ति सिनेमा देखता है वह विस्मय में रहता है। उत्पत्ति के समय यह ज्यादा चमत्कृत हुआ। पूर्व की सभी कहानियाँ साहित्य और मिथकों में से ही निकलीं, बाद की कहानियाँ गढ़ी जाने लगीं। बाद में वह साहित्य पर भी हावी हुआ। बाद में साहित्य सृजन कम हुआ। बाद में फिल्मों में साहित्य की कमी दिखाई दी। सिनेमा बाद में व्यापार से जुड़ा। व्यापार फिल्म का हिस्सा बन गया। व्यापार सर्वोपरि हो गया फिल्म पर। फिल्म को इंडस्ट्री कहना शुरू किया जाने लगा। लेकिन साहित्य को कभी भी इंडस्ट्री नहीं कहा गया। फिल्म आज प्रोडक्ट हो गई है। अब विषय रिसर्च और लोगों की रुचियों के आधार पर आने लगे। ऐसे में सांस्कृतिक चेतना की बात कौन करता। फिल्म के विषय समाज से ही आते हैं। यदि समाज में संस्कृति नहीं होगी तो सिनेमा में कंटेंट कैसे आएगा। यदि हम सोच को व्यावहारिक बनायेंगे तो वह सिनेमा में भी आयेगा। आज जरूरत है कि गाँव से लोग आकर सिनेमा बनायें। क्योंकि अनुभूत सत्य अनुभूत सत्य होता है बीज यही है। यतीन्द्र मिश्र का कहना था कि सिनेमा को इस बात का दोष नहीं देना चाहिए कि सिनेमा में साहित्य क्यों नहीं है। साहित्य के विकल्प की तरह सिनेमा नहीं आया था, वह स्वतंत्र था। सिनेमा में साहित्य एक अवयव की तरह रहा है। ऐसा दावा कभी नहीं किया गया कि सिनेमा साहित्य को आगे बढ़ाने के लिए आया है। उसके अपने कंटेंट ने उसे अलग विधा का रूप दिया है। यह साहित्य का पूरक रहा है। जिस तरह की बातें सिनेमा कर रहा था, वे समाज से ही तो आई है। वास्तव में, सिनेमा ने यथार्थ का दस्तावेजीकरण किया है। आजादी के दौर के गीतों को देखिए – दूर हटो ए दुनियावालों ये हिंदुस्तान हमारा है। तमाम तरह की विचाराधाराओं को सिनेमा ने अभिव्यक्ति दी है। यदि अतीत के लाइव कार्यक्रमों को आज देखें तो आज वह अप्रासंगिक हो गए हैं। लेकिन सिनेमा कालजयी है। कभी का सिनेमा हो, वह हर समय समकालीन है। सत्यजीत रे के समय को आज समझना हो तो सिनेमा द्वारा बेहतर तरीके से समझा जा सकता है।

प्रसून जोशी ने आगे कहा कि क्या संस्कृति के दायित्व को सिनेमा पूर्ण रूप से निभाता है? यह उलझन भरा प्रश्न है। फिल्म चूंकि इंडस्ट्री है इसलिए उसके साथ कई चीजें जुड़ी होती हैं इसलिए पूर्ण रूप से यह मान लेना ठीक नहीं होगा कि फिल्में संस्कृति को पूर्ण रूप से प्रतिबिंबित करती हैं। संस्कृति एक कथानक है, एक नेरेटिव है संस्कृति अलग-अलग होती है। संस्कृति सोच को परिभाषित करती है। जब विश्व बाहर की ओर देख रहा था भारत अंदर की ओर देख रहा था। जब विश्व बहिर्मुखी था भारत अंतर्मुखी हो रहा था। यह उसे आत्मिक सुख दे रहा था। सोच लगातार परिष्कृत होती है लेकिन दिशा का निर्धारण के साथ न्याय किया जाना आवश्यक है।

वाणी त्रिपाठी ने कहा कि संस्कृति का कथानक तीव्रता से बदला है। यथार्थ दो तरह का होता है - एक थोपा हुआ यथार्थ और भोगा हुआ यथार्थ। इन्हीं में से सिनेमा विकसित हो रहा है। छोटे-छोटे समाजों की कहानियाँ भी सफल हो

शेष पृष्ठ 2 पर

11वें विश्व हिंदी सम्मेलन हिंदी के वैश्विक विस्तार की नयी इबारत लिख रहा है। यह सम्मेलन भी हिंदी के विस्तार की अनंत संभावनाओं के बीच हम हिंदी वालों को आत्मालोचन और आकलन का अवसर प्रदान करेगा। यह सम्मेलन केवल एक उत्सव मात्र नहीं होगा वरन् इस दौरान हिंदी के अतीत, वर्तमान और भविष्य को लेकर चिंतन और विमर्श के कई गवाक्ष खुलेंगे। हिंदी की विकास-यात्रा में भाषा से साहित्य और फिर ज्ञान की अन्य शाखाओं तक का सफर अभी मंज़िल से कितनी दूर है? इस यक्ष-प्रश्न का उत्तर तलाशने का इससे बेहतर मंच कहाँ मिल सकता है?

हिंदी की समृद्धशाली सृजन-परम्परा का गौरवशाली अतीत रहा है। हमारी सामाजिक-सांस्कृतिक स्मृतियों में सरहपा, अमीर ख़ुसरो, सूर, कबीर, तुलसी, मीरा, रैदास, रसखान, रहीम, जायसी का सृजन-कर्म आज भी जीवंत और प्रासंगिक बना हुआ है तथा जातीय पहचान, संगीत, कला और आचार-विचार को एक जाग्रत स्वर दे रहा है। सामुदायिक ज़िन्दगी की कलात्मक अभिव्यक्ति भी यहीं सुनाई पड़ती है।

भारतीय साहित्य की चिंतनधारा एकांगिता को स्वीकार नहीं करती, वरन् इहलोक और परलोक, दोनों को समग्रता में स्वीकृति प्रदान करती है। लोक मात्र अवधारणा नहीं बल्कि कर्म-क्षेत्र है। हिंदी की 22 जनपदीय बोलियों में लोक रचा-बसा है और लोक-संग्रह का पथ ज्ञानी, देही-विदेही, सब के लिए है। लोक द्वारा अस्वीकृत शायद ही कभी स्वीकार्य हो।

"यद्यपि शुद्धं लोक विरुद्धं न करणीयम् न करणीयम्"

लोक-जीवन के सार्वकालिक सरोकारों को साहित्य बखूबी परिभाषित करता है तथा तरोताज़ा भी रखता है। यह सिद्धि को नहीं, साधना को महत्त्व देता है क्योंकि सिद्धि में ठहराव है और साधना में निरंतरता। निरंतरता में ही संभावनाओं की आकाशगंगा की तलाश की जा सकती है तभी जाकर हिंदी के व्यापक विकास और विस्तार में सृजन की महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्धारित की जा सकती है। यद्यपि इसके अस्तित्व के संघर्ष की गाथा बड़ी लम्बी

संपादकीय

है। फ़ारसी और अंग्रेज़ी के चंगुल से बचते-बचाते अपनी धारा को अबाध गति से बढ़ाती हुई, विश्व-क्षितिज को संस्पर्श करने की दिशा में यह सतत अग्रसर है।

साहित्यिक परिवेश ही साहित्य-सृजन और विकास की आधारभूमि का निर्माण करता है और परिवेश के अनुकूल ही सृजन-कर्म प्रकट होता है। हर युग में सत्ता और समाज को दिशा-निर्देश देने का काम साहित्य ने किया है और साहित्यिक पत्र-पत्रिकाएँ महत्त्वपूर्ण कारक का काम करती रही हैं, साथ ही साथ, साहित्यिक वातावरण के सृजन, प्रचार-प्रसार एवं नियंत्रण में दक्षता का परिचय देती रही हैं।

साहित्यिक पत्रकारिता ने आरम्भ से ही इस तरह की महत्त्वपूर्ण भूमिकाओं का ज़िम्मा उठाया है। आज फिर एक बड़ा प्रश्न सामने खड़ा हो उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा है, क्योंकि वर्तमान पत्रकारिता दिशा-विहीन हो गयी है। नवजागरण से अब तक का साहित्य खेमेबाज़ी का शिकार रहा है। कोशिश यह होनी चाहिए कि बहस-मुबाहिसा और संवाद की संभावना हमेशा बनी रहे, लोकतंत्र की यह अनिवार्य शर्त है अन्यथा साहित्यिक क्रियाशीलता के अभाव में चुनौती की संभावना क्षीण हो जायेगी और जहाँ चुनौती ही न हो, वहाँ घालमेल, छद्म महानता, आत्ममुग्धता आदि का होना सुखद लक्षण नहीं है। ऐसे में, साहित्यिक पत्रकारिता का तटस्थ मूल्यांकन होना चाहिए, नहीं तो, फिर साहित्यिक धुंध और बाज़ारूपन की सड़ांध आने से शायद ही रोका जा सके। साहित्य की कोई भी विधा तभी समादृत हो सकती है जब उस सृजन के केंद्र में मनुष्य हो, अन्यथा साहित्य के स्थापित मूल्यों में उपभोक्तावाद की काली छाया मंडराती हुई दिखेगी तथा सम्पूर्ण जनमानस की जड़ें विखण्डित हो जाएंगी। फिर भावनात्मक फ़ासला बढ़ेगा। जब भावनाओं और संबंधों की कोई अहमियत नहीं रहेगी, तब अनुभवजन्य साहित्य-सृजन का प्रतिफलन भी डरावना होगा। इतना ही नहीं, उपभोक्तावाद का इतना कुप्रभाव पड़ेगा कि मनुष्य का आंदोलनधर्मी चरित्र बदल जाएगा, भाषाएँ एवं उनमें लिखे साहित्य संघर्ष, क्रांति की पूर्वपीठिका तैयार करने में पूर्ण रूप से अक्षम हो जाएंगे क्योंकि श्रेष्ठ साहित्य ही संघर्ष की उर्वर ज़मीन तैयार करता है और उससे पोषित निधियाँ चिरंजीवी हो संपूर्ण चेतना को मुखरित करती हैं तथा अनुसंधान व सृजन के विविध द्वार खोल, विश्व मानव को अभिव्यक्ति देती हैं। आज आर्थिक-प्रगति, प्रतिस्पर्धा और मानसिक अशांति से उत्पन्न संघर्ष, रचनात्मक मानव-मूल्य से ओत-प्रोत सृजन-संपदा की माँग करता है।

सूचना एवं संचार क्रांति की दस्तक की आहट साहित्य में भी सुनाई देने लगी है। इसका लाभ उठाते हुए साहित्यिक विस्तार को अप्रत्याशित गति प्रदान की जा सकती है। संभावनाओं के व्यापक क्षेत्र तक सृजन की धारा का प्रवाह अविरल गति से बढ़ता रहे, आम जन को समर्थ बनाने के लिए समर्पित भाव से जुड़ते हुए -"कीरति भनिति भूति भलि सोई। सुर सरि सम सब कंह हित होई।।" के आदर्श पर चलते हुए साहित्य जनोन्मुखी हो, गंगा की तरह कल्याणकारी हो, तभी सही अर्थों में सृजन कर्म सामर्थ्यवान बन सकेगा।

प्रो. विनोद कुमार मिश्र

'संस्कृतियाँ साझा होंगी संचार माध्यमों से'

प्रो. प्रीति सागर की रपट

गोस्वामी तुलसीदास नगर, 19 अगस्त। 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन के दूसरे दिन सुरुज प्रसाद मंगर 'भगत' कक्ष में 'संचार माध्यम और भारतीय संस्कृति' विषय पर छठे समानान्तर सत्र की अध्यक्षता सत्यदेव टेंगर ने की। वरिष्ठ पत्रकार शशि शेखर ने अपने बीज वक्तव्य के प्रारंभ में इस बात पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा कि मॉरीशस में आकर भारत से बाहर आने का अहसास नहीं हो रहा है क्योंकि भारतीय संस्कृति मॉरीशस में अच्छी तरह रची-बसी है। भारतीय संस्कृति की चर्चा करते हुए

उन्होंने कहा कि कुम्भ भारत का एक अनूठा आयोजन है। वह केवल धार्मिक नहीं वरन् एक सांस्कृतिक आयोजन है। उन्होंने इस बात पर प्रसन्नता जताई कि भारतीय कांवड़ यात्रा का एक स्वरूप मॉरीशस में भी मौजूद है। उन्होंने कहा कि भारत की आजादी की लड़ाई संस्कृति की रक्षा की लड़ाई थी और संस्कृति की रक्षा के लिए भारतीय सदैव तत्पर रहे हैं। मीडिया एक सशक्त माध्यम है जो पूरी दुनिया को परस्पर जोड़ रहा है। उन्होंने विश्वास जताया कि मीडिया के माध्यम से हमारी संस्कृतियाँ साझा होंगी। वी.के. कुठियाला ने कहा कि पत्रकारिता संचार का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। हमारे आस पास के मीडिया के कई स्वरूप हैं। कभी-कभी हमारा मीडिया भारतीय संस्कृति का दर्शन नहीं कराता लेकिन उसकी आत्मा मूलत: भारतीय ही है। राष्ट्रकवि दिनकर का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि हर व्यक्ति की चिति होती है। हर राष्ट्र की एक सामूहिक चिति भी होती है। अमेरिका और यूरोप की चिति व्यापार है जबकि भारत की चिति अध्यात्म है। भारतीय संस्कृति का मूल अध्यात्म है। उन्होंने कहा कि फिल्मों के माध्यम से भारतीय संस्कृति का संरक्षण एवं संवर्द्धन हुआ है। आज भी कुछ ऐसी फिल्में बन रही हैं जो नई पीढ़ी में भारतीय संस्कृति की मूल चेतना को, जीवन मूल्यों को फैला रही हैं। उन्होंने कहा कि जनसंख्या के एक बड़े हिस्से में हिंदी धारावाहिकों के प्रति प्रेम और आकर्षण बढ़ता जा रहा था। पहले के धारावाहिक प्राय: भारतीय संस्कृति का संपोषण करने वाले थे। बाद में कुछ ऐसे धारावाहिक आए जिन्होंने भारतीय संस्कृति को प्रदूषित किया। लेकिन आज भी 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' जैसे धारावाहिक भारतीय मूल्यों को संपोषित करने वाले हैं। उन्होंने कहा कि यदि हम भारतीय संस्कृति को श्रेष्ठ जीवन शैली के रूप में देखते हैं तो हमें सुनियोजित ढंग से इसके प्रचार-प्रसार का प्रयास करना चाहिए।

दूसरे वक्ता विवेक गुप्ता ने कहा कि हर युग में ऐसे संचार माध्यम रहे हैं जो संस्कृति को प्रभावित करते हैं लेकिन आज संस्कृति संचार माध्यमों को प्रभावित कर रही है। संस्कृति हमारी विरासत है और हमें इसकी रक्षा के प्रयास करने चाहिये।

माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलपति जगदीश उपासने ने कहा कि संस्कृति के पीछे एक दर्शन होता है। संस्कृति से संस्कार आते हैं जिनमें नीति, नियम, मूल्य सभी समाहित हैं। संस्कृति भारत की आत्मा का श्रृंगार है। भारत की अस्मिता है। आज संचार माध्यमों के स्वरूप, स्वभाव और व्यवहार में बहुत परिवर्तन आ गया है। मीडिया के प्रयोग का तरीका बदल गया है। संचार माध्यम समाज का विवेक तय नहीं कर सकते। लोगों को आधारभूत सांस्कृतिक मूल्यों से परिचित होना चाहिए।

मंचस्थ विद्वानों द्वारा अरुण कुमार की पुस्तक 'आपातकालीन पत्रकारिता की संघर्ष गाथा' का लोकार्पण किया गया।

जलपान के पश्चात मॉरीशस के विद्वान केसन बुधू ने मॉरीशस के परिप्रेक्ष्य में मीडिया और भारतीय संस्कृति के स्वरूप पर प्रकाश डाला। मॉरीशस के दूसरे विद्वान सत्यदेव प्रीतम ने मॉरीशस में पत्रकारिता के स्वरूप पर सूचनाप्रद विचार प्रस्तुत किए।

प्रस्तुत सत्र में बाबू राम त्रिपाठी, टी.एन.सिंह, राजेंद्र शर्मा, आर.सेतुनाथ, भारती कुठियाला, विजय शंकर चतुर्वेदी, मनोज तिवारी, रीना यादव, आशा रानी, श्रीनिवास पाण्डेय, गीता सहाय, कविता सहाय, शीला शर्मा, हरेंद्र प्रताप, योगेंद्र प्रताप, मीना यादव, एम.एल.गुप्त, विष्णु लोक बिहारी, आरती कुमारी, निर्मला भुराड़िया आदि ने विचार एवं सुझाव प्रस्तुत किए। कार्यक्रम के अंत में 'ओखा' कहानी संग्रह का विमोचन मंचस्थ विद्वानों द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन सहअध्यक्ष राम मोहन पाठक ने किया।

सिनेमा को प्रामाणिकता ... पृष्ठ 1 का शेष

रही हैं। साहित्य यदि इस तरह से लिखा जाएगा, जो अलग है तो फिल्मों का आंदोलन भी आगे बढ़ेगा। हमारा समकालीन साहित्य फिल्म संस्कृति को प्रतिबिंबित कर रहा है, यह देखना आवश्यक है। पूरा सत्र संवाद सत्र में बदल गया था।

प्रसून जोशी – बाजार की शक्ति का प्रयोग दर्शक स्वयं कर सकता है। बाजार का निर्धारण भी दर्शक ही करता है। जब दो संस्कृतियाँ मिलती हैं तो वह एक नई संस्कृति को जन्म देती हैं जिसमें अतीत की गंध होती है और वर्तमान की खुशबू। एसएमएस शब्द संदेश की हत्या से आता है न कि उसके साथ। संस्कृति यदि अड़ जाएगी तो सड़ जाएगी।

सीताराम ने प्रश्न करते हुए कहा कि हिंदी सिनेमा के जरिए भारतीय संस्कृति के संरक्षण के क्या प्रयास किए जा रहे हैं? आज के समय के सिनेमा से देश को क्या मिल रहा है? क्या आज का सिनेमा देश प्रेम की भावना बढ़ाने के लिए कुछ करेगा? इंटरनेट के माध्यम से जो वेबसीरीज आई हैं उसके कंटेंट पर कैसे कंट्रोल कर सकते हैं?

प्रसून जोशी – इस पर पहले चर्चा होनी चाहिए ताकि संवेदनशीलता आए। कंटेंट को हम पूरी तरह नियंत्रित नहीं कर सकते। कंटेंट को दिशा देने के लिए विभिन्न संस्थान हैं। ऐसे फिल्मकारों के पास बात पहुँचनी चाहिए। ऐसे विषयों पर चर्चा-परिचर्चा से ही यह संभव हो पाएगा। ये फिल्मकार भी हमारे समाज से ही आते हैं, यह उन्हें स्वयं सोचना होगा।

पंजाब विश्वविद्यालय के गुरमीत सिंह ने कहा कि हिंदी का साहित्य जगत है उनमें फिल्मी गीतकारों को मान-सम्मान नहीं प्राप्त हैं, क्यों?

प्रसून जोशी – आपकी बात से सहमत नहीं हूँ। गोपालदास जी को हमने सुना है लेकिन अगर गीतकार ये चाहें कि मुझे साहित्य में भी सम्मान मिले यह ठीक नहीं है। साहित्य के अपने मानक हैं। अच्छे गीतों को साहित्य का हिस्सा मानना चाहिए। सभी को उसका हिस्सा नहीं माना जा सकता है। तारे जमीन को उतना सराहा गया जितना साहित्य को सराहा जाता है।

अशोक चक्रधर – साहित्य क्या है इस पर दोबारा सोचना पड़ेगा। साहित्य में रचि कृति व्यावसायिक कब होती है। साहित्य को पुनपर्रिभाषित करने का समय आ गया है।

प्रसून जोशी – क्या और कैसे कहा जा रहा है जब जोर होगा तब प्रश्न दूर हो जाता है।

कुमुद शर्मा – फिल्म उद्योग पर भी देश का दायित्व है, फिल्म इंडस्ट्री सांस्कृतिक उद्योग हो गई है। जो फिल्मों में आ रही है वह भारतीय संस्कृति नहीं है।

प्रसून जोशी – फिल्में भी अपने मानकों के आधार पर तैयार होती है। इसमें जो संस्कृति के प्रति जिम्मेदारी है यह लिखित नहीं है, इसे आत्मसात करने की जरूरत है। यह स्वयं से आता है। यह कोई जादू का खेल नहीं है जो बगैर उसे जाने प्रस्तुत करता हो। जब फिल्म बनाई जाती हैं तो पहले उसकी परिस्थितियों पर, उसके विभिन्न पहलुओं पर काम किया जाता है। समाज के साथ जुड़ाव, उनके साथ संवेदनशीलता की समझ को विकसित किया जाता है तब फिल्म बनती है।

यतीन्द्र मिश्र – नैतिकता का दबाव फिल्मों पर बनाया जाता है। नैतिकता के अपने मानदंड होते हैं, जो जनता पंसद नहीं करती वह चलन में नहीं रहता है।

अटल जी की याद में काव्यांजलि

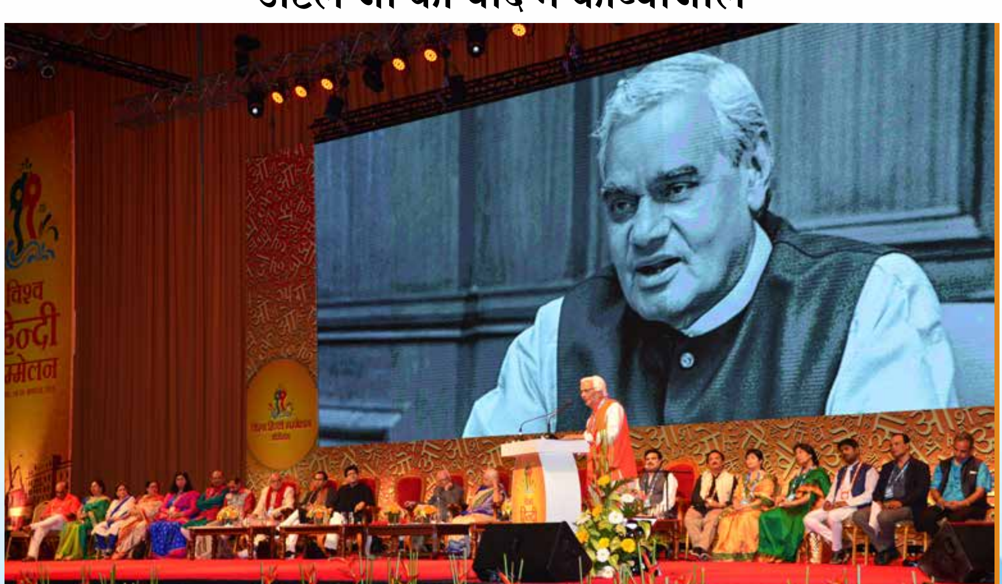

11वें विश्व हिंदी सम्मेलन के दूसरे दिन, रविवार की रात अटल बिहारी वाजपेयी को काव्यांजलि देते हुए कविगण

सोचने की कोई सीमा नहीं : एम.जे. अकबर

गरीबी दूर करने में सहायक हो सकती है तकनीक

अशोक मिश्र और डॉ. हर्षलता पेटकर की रपट

संत तुलसीदास नगर (मारीशस), 19 अगस्त। विदेश राज्य मंत्री एम. जे. अकबर ने कहा है कि सोचने की कोई सीमा नहीं है। श्री अकबर ने भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विचार का उल्लेख करते हुए कहा कि तकनीक गरीब का हथियार बन सकती है। यह गरीबी दूर करने में काफी मदद कर सकती है। जब तक हम अपना काम निजी क्षेत्र तक लेकर नहीं जाएंगे तब तक वह अधूरा रहेगा। श्री अकबर ने 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन के दूसरे दिन प्रौद्योगिकी का भविष्य-निकष एवं इमली सहित अन्य प्रौदयोगिकी उत्पाद सत्र में अध्यक्षीय वक्तव्य दे रहे थे। श्री अकबर ने कहा कि सभी विशेषज्ञों से प्राप्त सुझावों की एक रिपोर्ट तैयार की जाएगी जिसमें प्राप्त सुझावों पर अमल करने की दिशा में कार्य किया जाएगा। उन्होंने कहा कि मारीशस गणराज्य के साथ संयुक्त रूप से मिलकर हिंदी को और समृद्ध बनाने की दिशा में कार्य किया जाएगा।

सत्र के संचालन कर रहे कवि अशोक चक्रधर ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि इंटरनेट एवं क्लाउड कंप्यूटिंग से पूरी दुनिया में क्रांति हुई है। अंग्रेजी भाषा का वर्चस्व अभी भी बना हुआ है। भारतकोश से अंग्रेजी विकिपीडिया को आम जन श्रेष्ठ मानते हैं। निकष का रथ जगन्नाथी रथ है

जिसे हम सबको मिलकर खींचना पड़ेगा।

सत्र की शुरुआत में निकष एवं कंठस्थ के बारे में पीपीटी प्रस्तुति का प्रदर्शन किया गया। पीपीटी में निकष को हिंदी में दक्षता का प्रमाण पत्र बताया गया कि वह पूरे विश्व के लिए भारत का प्रवेश दवार सिद्ध होगा।

भारत कोश के संचालक आदित्य चौधरी ने कहा कि निकष को अद्यतन रखा जाए एवं उसके अपडेटस आई ओएस, माइक्रोसाफ्ट एवं एंड्रायड प्लेटफार्म पर उपलब्ध होने चाहिए। निकष के लिए गुणवत्ता जांच मीटर की आवश्यकता है एवं कारोके उपकरण द्वारा हिंदी आसानी से सिखाई जा सकती है। निकष और ईमली की सफलता कृत्रिम मेधा का उपयोग कर सरलता से प्राप्त हो सकती है। अंग्रेजी का शब्दकोश दुनिया में सबसे बड़ा शब्दकोश है क्योंकि उसमें अन्य भाषाओं से भी शब्द लेकर शामिल किए गए हैं। विवेक दुबे ने कहा कि निकष को दुनिया की सभी भाषाओं का इस्तेमाल करके बनाया जाए। कवि आलोचक ओम निश्चल ने कहा कि निकष द्वारा हिंदी ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचनी चाहिए। निकष और इमली महायोजना है और इमली एक महास्पप्न की तरह है। हिंदी प्रौदयोगिकी संसाधन केंद्र को स्वायत्तता प्राप्त होनी चाहिए। संचार एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय से संबंधित डा. स्वर्णलता ने कहा कि सर्च इंजन आप्टीमाइजेशन पर एवं प्रचार प्रसार पर काम होना चाहिए। सी डैक के महानिदेशक हेमंत दरबारी ने कहा कि निकष एक महायज्ञ है और इस महायज्ञ में कोई भी आहुति दे सकता है। हम सभी यह प्रण करें कि यह कार्य सभी लोग संयुक्त रूप से मिल- जुलकर करें। सीडैक के अजय कुमार ने सुझाव दिया कि इमली एवं निकष के साथ युवा वर्ग व छात्रों को जोड़ा जाए। सीडैक के ही करीमुल्ला ने कहा कि निकष की शुरुआत बहुत ही योजनाबद्ध ढंग से होनी चाहिए। विनय गुदारी (मारीशस) ने कहा कि हम प्रवासी देशों को भी इस प्रौदयोगिकी की यात्रा में शामिल किया जाए। हमारी मातृभाषा हिंदी नहीं है बल्कि फ्रेंच या क्रियोल है। साफ्टवेयर हमारी जरूरत के मुताबिक बनाया जाना चाहिए। तकनीकी विशेषज्ञ बालेंदु दाधीच ने हिंदी को बढ़ावा देने के लिए तकनीकी से जोड़ने और उसके अधिक इस्तेमाल पर जोर दिया। हिंदी के प्रोफेसर सुरेंद्र गंभीर ने कहा कि निकष में वयस्कों और बच्चों के लिए विकल्प होना चाहिए। बोलना, समझना, लिखना, पढ़ना हिंदी शिक्षण के इन चारों कौशलों पर आधारित सामग्री का निर्माण होना चाहिए। भाषा वैज्ञानिक विजय कुमार मल्होत्रा ने कहा कि सभी से प्राप्त प्रतिक्रियाओं और सुझावों पर काम किया जाना चाहिए। अनूप भार्गव ने जोर देकर कहा कि निकष आम जन के लिए विश्वसनीय होना चाहिए ताकि सभी उस पर पूरी तरह भरोसा कर सकें। विवेक दुबे ने सुझाव रखा कि तकनीकी का इस्तेमाल कर रहे उपयोगकर्ता के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए ष अनुपम श्रीवास्तव ने कहा कहा कि निकष का एक अंतरराष्ट्रीय कोड हो जिससे भारत और डायस्पोरा देश मिलकर कार्य कर सकें। इसके साथ ही उन्होंने बहुत सारे सुझाव रखे जिस पर सत्र की अध्यक्षता कर रहे एम. जे. अकबर ने कहा कि आप सारे सुझाव लिखकर एक प्रस्ताव के रूप में भेजने का कष्ट करें। कार्यक्रम का आयोजन महावीर प्रसाद दिवेदी आलेख प्रस्तुति कक्ष में किया गया।

प्रौद्योगिकी हमारी शक्ति बन गई है : किरण रिजिजु

डॉ. हर्षलता पेटकर की रपट

गोस्वामी तुलसीदास नगर, 19 अगस्त। गृहराज्यमंत्री किरण रिजिजु ने 'प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिंदी सहित भारतीय भाषाओं का विकास' समानांतर सत्र में कहा कि सोशल मीडिया और प्रौद्योगिकी हमारी शक्ति बन गई है। सत्र में सी-डैक द्वारा विकसित 'कंठस्थ' का लोकार्पण किया गया एवं निकष पर प्रस्तुतिकरण दिखाया गया। बीज वक्ता के रूप में प्रो. अशोक चक्रधर ने कहा कि प्रौद्योगिकी के नकारात्मक क्षेत्र जल्दी नजर आने लगते है परंतु यह नहीं भूलना चाहिए कि इसके कई गुण हैं। प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा ने भारतीय भाषाओं में स्पेल चेकर, ग्रामर चेकर और डीटीपी साफ्टवेयर की आवश्यकता को चिह्नित किया।

सी-डैक के महासंचालक डॉ. हेमंत दरबारी ने भारतीय भाषा प्रौद्योगिकी के विकास में सी-डैक की भूमिका पर प्रकाश डाला। महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. विनय गुदारी ने अपने वक्तव्य में सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के विकास के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि भारतीय डायस्पोरा का प्रसार करने हेतु मॉरीशस खिड़की के रूप में प्रयोग करने के बारे सूचित किया। माइक्रोसॉफ्ट के बालेंदु दाधीच ने 'भाषा प्रौद्योगिकी विस्तार: शब्द भारत और भारत का संस्कृति विषय पर वक्तव्य दिया।।

अंत में सभी प्रमुख वक्ताओं द्वारा सहभागियों के प्रश्नों का निराकरण किया गया। प्रल्हाद रामशरण, मॉरीशस द्वारा धन्यवाद ज्ञापन करते हुए सत्र की समाप्ति हुई।

सत्र का संयोजन अरविंद बिसेसर, मॉरीशस तथा सहसंयोजन बिपिन बिहारी, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग द्वारा किया गया।

वसुधैव कुटुम्बकम् और भूमण्डलीकरण की संकल्पना में बुनियादी अंतर है : डॉ. दिविक रमेश

प्रो. अवधेश कुमार की रपट

गोस्वामी तुलसीदास नगर, 19 अगस्त। गोपालदास नीरज सभागार में 'हिंदी बाल साहित्य और संस्कृति' विषय पर बीज वक्तव्य देते हुए डॉ. दिविक रमेश ने कहा कि जितना भी सृजनात्मक साहित्य होता है वह संस्कृति ही होता है। कोई भी साहित्य देशद्रोही नहीं हो सकता। सृजनात्मक साहित्य अनुभव की कलात्मक अभिव्यक्ति है इसलिए वह मौलिक होता है। हमारे देश में बाल साहित्य पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से आया था। 'देवपुत्र' बाल पत्रिका की चर्चा करते हुए डॉ. दिविक ने कहा कि पत्रिका के कवर पेज पर ही लिखा है 'बालकों में सृजनात्मक और अभिव्यक्ति का विकास' अर्थात् बच्चा काल्पनिक उड़ान ले सके और अभिव्यक्ति कर सके आज का बाल साहित्य बालक को मित्र समझता है और समझ को साझा करता है। उन्होंने कहा कि कल्पना के बिना कोई साहित्य नहीं हो सकता, पर कल्पना विश्वसनीयता के दायरे में आनी चाहिए। अमृतलाल नागर की कहानी 'अंतरिक्ष सूट में बंदर' की चर्चा करते हुए उसे आज के बाल मनोभाव की सार्थक कहानी बताया।

उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति केवल भारत तक सीमित नहीं है न ही हिंदी। हिंदी में अनूदित उत्कृष्ट साहित्य भी हिंदी का ही अपना माना जाना चाहिए। देवेंद्र मेवाड़ी, जयप्रकाश भारती, रजनीश अली, राजीव सक्सेना, विष्णु प्रसाद चतुर्वेदी आदि कितने ही महत्वपूर्ण रचनाकार हैं जो अनेक मनोभावों को लेकर बाल रचनाएँ करते रहे हैं। निष्कर्षात्मक टिप्पणी देते हुए दिविक जी ने कहा कि भारतीय वसुधैव कुटुम्बकम् और भूमण्डलीकरण की संकल्पना में बुनियादी अंतर है। भूमण्डलीकरण की आधार भूमि अर्थ या अर्थ संबंध है जबकि वसुधैव कुटुम्बकम् की आधार भूमि आत्मिक समतामूलक मानव कल्याणकारी सोच है। वस्तुत: भारतीय संस्कृति जो एक जातीय पहचान के रूप में तमाम भारतीयों में वास करती है मानव जाति की सामाजिक विरासत है।

वक्ता देवेंद्र मेवाड़ी ने सैंधव सभ्यता से लेकर वैदिक काल तथा पुराणों से लेकर हिंदी के भक्ति काल की चर्चा करते हुए कृष्ण की लीलाओं की जो चर्चा की वह बाल साहित्य की पूर्व पीठिका के लिए महत्वपूर्ण थी। अमीर खुसरो की पहेलियाँ भी बाल साहित्य का एक रूप है। मेवाड़ी जी ने सूरदास, तुलसीदास, हरिऔध, सुभद्राकुमारी चौहान की कविताओं से बाल साहित्य का संदर्भ जोड़ा तथा कहा कि आज के बच्चे को वर्तमान कहानी मिलनी चाहिए जिसमें तर्क एवं विश्वसनीयता की पूरी गुंजाइश हो।

सहअध्यक्ष डॉ. अलका धनपत ने मॉरीशस के बाल साहित्य की विस्तार से चर्चा की तथा 'मुडिया पहाड़' एवं 'परीसरोवर' की लोक कथाओं के बारे में बताते हुए कहा कि भारतीय गिरमिटिया में यह कथा अत्यन्त चर्चित है। महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस से निकलने वाली बाल पत्रिका 'बसंत' एवं 'रिमझिम' तथा हिंदी प्रचारिणी सभा से निकलने वाली 'पंकज' पत्रिका की विस्तार से चर्चा की तथा इस बात पर चिंता व्यक्त की कि जो लेखक आज लिख रहे हैं उनके छपने की पर्याप्त व्यवस्था नहीं है। उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ के कार्यकारी अध्यक्ष प्रो. सदानंद प्रसाद गुप्त ने बताया कि मॉरीशस के बाल साहित्यकार हमें अपनी रचनाएँ अथवा संपादित रचनाएँ भेजें। संस्थान उसे प्रकाशित करवाकर उन्हें उपलब्ध कराएगा।

वक्ता सुरेंद्र विक्रम ने बाल साहित्य के विकास में राष्ट्रीय बाल भवन नेशनल बुक ट्रस्ट आदि की चर्चा करते हुए कहा कि आज का बाल साहित्य सपाटबयानी से इतर गंभीर लेखन कर रहा है। बाल मनोभावों को समझकर उसके विविध रूपों पर लिखा जा रहा है। आज बाल साहित्य आंदोलन के रूप में उभरा है। इसे और आगे बढ़ाना है। यही हमारी मंशा है। उन्होंने सुझाव देते हुए कहा कि- साहित्यिक पत्र पत्रिकाओं में बाल साहित्य का कालम अनिवार्यत: होना चाहिए। समग्र बाल साहित्य पर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी प्रतिवर्ष होनी चाहिए। बाल साहित्य का वार्षिक आकलन होना चाहिए। हिंदी बाल साहित्य का तथ्यात्मक इतिहास होना चाहिए तथा बाल साहित्य की अकादमी होनी चाहिए।

'बाली' से आई श्रीमती उषा पुरी ने पंत के कथन को उद्धृत करते हुए कहा कि 'मानव के हृदय की शिराओं में बहने वाला मनुष्यत्व का रुधिर ही संस्कृति है' उन्होंने बाल साहित्य की स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि बाल साहित्य को साहित्य में गंभीर साहित्य नहीं माना जाता, न ही प्रकाशन जगत में आदर मिलता है। पर बाल साहित्य आज एक गंभीर साहित्य है लोक साहित्य में बालकों के विकास का अक्षय भंडार है। हरे कृष्ण देवसरे, प्रकाश मनु, जयप्रकाश भारती, द्रोणवीर कोहली आदि महत्वपूर्ण बाल साहित्यकार है। आज के बाल साहित्यकार को अत्यन्त सावधानी की जरूरत है। भारतीय संस्कृति से प्रभावित बालक संस्कारी होता है। चंदा मामा, बालक, बाल भारती, देवपुत्र, चंपक, पराग और नंदन आदि पत्रिकाएँ बालकों के आकर्षण का केंद्र रही हैं। धर्मयुग, सरिता, साप्ताहिक हिंदुस्तान इत्यादि में बाल स्तम्भ निकलते रहे हैं। उन्हें बच्चों द्वारा पसंद किया जाता रहा है। बाल साहित्य और बड़ों के साहित्य में केवल भाव बोध का अंतर है। पारिवारिक मूल्यों की रक्षा में जुटने पर ही हमारा एवं बच्चों का भविष्य सुरक्षित है। खुले संवाद के अंतर्गत प्रो. मोहन लाल छीपा ने बाल साहित्यकारों से निवेदन किया कि वे गर्भवती महिलाओं के लिए संवाद लिखें जो अच्छा संस्कार डाल सकें। यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य है पर है महत्वपूर्ण। इसी सत्र में विवेक गौतम-दिल्ली, गिरिराजशरण, प्रदीपराव-गोरखपुर तथा मनोहरपुरी आदि ने खुला संवाद दिया।

देवपुत्र के संपादक एवं सत्र के अध्यक्ष कृष्ण कुमार अस्थाना ने आज के बालकों में भारतीय संस्कृति की महत्वपूर्ण बातों को सिखाये जाने पर बल देते हुए कहा कि बालकों में बाल साहित्य के माध्यम से शाश्वत मूल्यों का विकास होना चाहिए। आज का बच्चा परीकथाओं को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में समझना चाहता है। बच्चे को आज क्या करना चाहिए यह भी अनिवार्यत: समझना होगा। 'युगधर्म' और 'राष्ट्रधर्म' पर जोर देते हुए अध्यक्ष महोदय ने कहा कि हमारा देश गवाह है कि आवश्यकता पड़ने पर माँ अपने बच्चे का बलिदान देते आई है। इस बात को बच्चों को ठीक से समझाना होगा। अध्यक्ष महोदय ने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि आज भी बाल साहित्य को वह स्थान व सम्मान नहीं प्राप्त हो रहा है जो होना चाहिए। हम विश्व के मार्गदर्शक रहे हैं हमें बच्चों के भीतर यह भाव पैदा करना होगा। संवेदनाएँ जगानी होगी, राष्ट्र के प्रति भाव पैदा करना होगा। सूक्तियों में कहा गया है नदियाँ अपना पानी नहीं पीतीं, वृक्ष स्वयं फल नहीं खाते आदि बातें एवं इस भाव की संवेदना को बालकों में जगाना होगा। इस सत्र का कुशल संयोजन डॉ. मधु पंत ने किया। सत्र में जीवंत वक्तव्य एवं उत्तेजक संवाद भी हुए।

भारतीय संस्कृति की संवाहिका है हिंदी : प्रो. सुशील कुमार शर्मा

सामान्य एवं चयनित आलेखों के सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. सुशील कुमार शर्मा ने कहा कि हिंदी भारतीय संस्कृति का पर्याय तथा दर्पण है। भारतीय संस्कृति ने विश्व को भी अपने चुंबकीय आकर्षण में आबद्ध किया है। हिंदी को विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित करने में विश्व हिंदी सम्मेलनों की महती भूमिका रही है। हिंदी को समझे बिना भारतीय संस्कृति को नहीं समझा जा सकता इसलिए विश्व के सभी देश अपनी संस्कृति को संभालकर भी हिंदी को अपनाने का स्तुत्य कार्य कर रहे हैं। सत्र में पिछले दिन लगभग पचास से अधिक विदवानों ने अपने शोध पत्रों का वाचन किया। सत्र में प्रो. श्यौराज सिंह, डा. मधु भारदवाज, प्रणव शास्त्री, रजत रानी आर्य़, कला जोशी, मृदुला श्रीवास्तव, अरुण खरे, के श्रीलता, डा. माला मिश्रा, कैलाश देवी सिंह. डा. श्रुति, निशा मलिक, डा.संध्या गर्ग, डा. शिरीन कुरैशी, डा. कल्पना गवली आदि ने अपने लेखों का वाचन किया। सत्र के समन्वयक महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविदयालय के हिंदी अधिकारी राजेश कुमार यादव रहे।

ज्ञान की भाषा है हिंदी

पश्चिम बंगाल के राज्यपाल व हिंदी के वरिष्ठ कवि केशरीनाथ त्रिपाठी से प्रो. मनोज कुमार और डॉ. सुप्रिया पाठक की बातचीत

पिछले विश्व हिंदी सम्मेलनों की अपेक्षा 11वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन कितना भिन्न है?

मैं समझता हूँ यह बहुत अच्छा आयोजन हुआ है। किसी चीज की कमी नहीं है। मॉरीशस एक ऐसा देश है जहाँ एक स्थान से दूसरे स्थान की दूरी अधिक है। बावजूद इसके हमारे समस्त प्रतिभागी अत्यंत संतुष्ट नजर आ रहे हैं। वे उत्साहपूर्वक इस हिंदी सम्मेलन के सभी सत्रों में अपनी भागीदारी निभा रहे हैं। उनकी दृष्टि भी अत्यधिक सकारात्मक है। विभिन्न क्षेत्रों में हम हिंदी का प्रयोग किस प्रकार कर सकते हैं इस पर लगातार विचार विमर्श हो रहा है। निश्चित रूप से यह सम्मेलन कोई मेला नहीं है बल्कि सोद्देश्य आए हुए लोगों का संगम है जो हिंदी की प्रगति एवं उसके उत्थान के लिए यहाँ आये हैं। ये हिंदी को वैश्विक एवं सार्थक स्वरूप देने के लिये आये हैं। उनका इस 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन में बहुत योगदान है।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की इस सम्मेलन में भूमिका को आप किस रूप में देखते हैं?

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा द्वारा 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन के दौरान जो समाचार पत्र निकाला जा रहा है उसमें एक दृष्टि मुझे विशेष रूप से आकर्षित कर रही है, वह यह आयाम कि हम हिंदी को आगे बढ़ाएँ और सम्मेलन के सार्थक संदेश को जन-जन तक पहुँचाएं। आपके समाचार पत्र का स्वरूप अत्यंत सार्थक है। यह स्वयं में अत्यंत बड़ी बात है। इस बुलेटिन के माध्यम से प्रतिभागियों के भावों को स्पष्ट रूप से पाठकों तक पहुँचा रहे हैं। यह हिंदी विश्वविद्यालय का एक सार्थक योगदान है इस विश्व हिंदी सम्मेलन में।

तकनीक और हिंदी के संबंध को आप किस रूप में देखते हैं?

अगर हम विगत 50 वर्षों का इतिहास देखें तो हमने विज्ञान एवं तकनीक के क्षेत्र में हिंदी भाषा में नये नये शब्दों को निर्मित होते हुए देखा है। इससे यह विश्वास पैदा होता है कि हिंदी में शब्दों की प्रचुरता तो है ही, साथ ही इसमें नये शब्दों को समाहित करने की भी अद्भुत क्षमता है जो इस भाषा की समावेशी प्रवृत्ति का परिचायक है। यह दर्शाता है कि हमारी भाषा में हीनता का भाव नहीं है। इसके मूल में संस्कृति तथा संस्कृत भाषा की भूमिका है। हिंदी का उत्तरोत्तर विकास हो रहा है जिससे हिंदी का व्याकरण बहुत समृद्ध हो रहा है।

कई लोग यह मानते हैं कि अब मॉरीशस में हिंदी एवं भोजपुरी जैसी भाषाओं का लोप हो रहा है और उसके बदले अंग्रेजी एवं क्रियोल भाषा का असर बढ़ा है। इसके बारे में आपकी क्या राय है?

ऐसा नहीं है। विश्व के कुछ प्रमुख देशों में मुख्यत: अंग्रेजी बोली जाती है। वर्तमान में आवागमन के बढ़ते साधनों के कारण एक देश का दूसरे देशवासियों के साथ संपर्क बढ़ा है। इसलिए उनसे संबंध बनाने के लिए अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग होता है। परंतु घरों में व्यवहार होने वाली भाषा आज भी भोजपुरी, हिंदी और क्रेयोली ही है। दूसरी भाषाओं को हिंदी से कोई खतरा नहीं है। अन्य भाषाओं की अपेक्षा हिंदी का प्रयोग अधिक होता है। हिंदी के दो रूप हैं। एक बड़ी बहन के रूप में जो अन्य भाषाओं को संरक्षण भी देती है। दूसरे एक भाषा के रूप में यह विश्व की अन्य भाषाओं को कड़ी चुनौती भी देती है। वर्तमान सरकार हिंदी के प्रचार प्रसार को लेकर बहुत सराहनीय कार्य कर रही है। कई अंग्रेजी चैनल अपने हिंदी संस्करण खोल रहे हैं। यह निश्चित रूप से भारत में हिंदी की समृद्धि का द्योतक है।

हिंदी में कितना रचनात्मक बदलाव हुआ है?

हिंदी में अत्यंत संभावनाएँ हैं। वह कल की चुनौतियों से संघर्ष करने के लिए बहुत तेजी से आगे बढ़ रही है। उदाहरण के लिए तकनीकी क्षेत्र में हिंदी का एक जमाने में कोई उपयोग नहीं था। लेकिन अब लोग उसका प्रयोग कर रहे हैं। यह अत्यंत संतोषप्रद है कि विश्व की किसी भी भाषा की तुलना में हिंदी पिछड़ी नहीं है। हाँ, हमारी प्रगति थोड़ी धीमी है, लेकिन हम धीरे-धीरे प्रगति करते हुए उन भाषाओं को टक्कर दे रहे हैं और हम अपनी उपयोगिता भी सिद्ध कर रहे हैं। हिंदी के साथ-साथ एक और महत्वपूर्ण परिघटना हो रही है, विश्व में हिंदी का स्थान। धीरे धीरे भारत ने विश्व पटल पर जो गर्व का स्थान हासिल किया है उसके कारण संचार के माध्यमों में बहुत बढ़ोत्तरी हुई है और उन संचार के माध्यमों में अब हिंदी का प्रयोग प्राय: दिखाई दे रहा है। मैं वैश्विक स्तर की बात कर रहा हूँ। यह विश्व व्यापार की भाषा बन रही है, तकनीक की भाषा रही है, ज्ञान की भाषा बन रही है, मैं समझता हूँ कि हिंदी का भविष्य बहुत उज्ज्वल है। हिंदी जब अंतरराष्ट्रीय आर्थिक बाजार की भाषा बन जायेगी तब हम उसके चमत्कार से परिचित होंगे।

प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाएँ

प्रस्तुति : डॉ. सुप्रिया पाठक

अद्भुत है विश्व हिंदी सम्मेलन की देन

-प्रो. जी. गोपीनाथन, पूर्व कुलपति महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में गिरमिटिया को हिंदी सिखाने का प्रयास किया था। वे समझते थे कि हिंदी आपसी संप्रेषण की ही भाषा है। दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा द्वारा दक्षिण में हिंदी प्रचार आंदोलन शुरू किया गया। 1936 में वर्धा में भी राष्ट्रभाषा प्रचार सभा स्थापित की गई। यह विश्व हिंदी सम्मेलन की देन है कि उससे संकल्प पैदा हुआ कि हिंदी विश्व भाषा बन सकती है और उसमें विश्व भाषा बनने की शक्ति है। हमें स्वीकार करना चाहिए कि विभिन्न उपनिवेशों में हिंदी का फैलाव और विकास हुआ है। हिंदी मात्र भारतीय भाषाओं को ही नहीं विश्व की भाषाओं को जोड़ने का भी काम कर रही है। मॉरीशस में प्रारंभ में डच का प्रभाव था बाद में फ्रेंच और अंग्रेजी का प्रभाव हुआ। यहाँ हिंदी का विकास इन भाषाओं के साथ सहयोग, संघर्ष और बलिदान देकर हुआ है। यहाँ के हिंदी भाषा भाषियों ने बलिदान देकर हिंदी की रक्षा की है। हिंदी को और अधिक संघर्ष करना पड़ेगा। अंग्रेजीदा लोगों का अंदरूनी भयानक विरोध है। ये अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए संघर्षरत हैं। आज की प्रौद्योगिकी के साथ जोड़कर नई पीढ़ी की आवश्यकतानुसार हिंदी को बढ़ाने की जरूरत है। भारतीय संस्कृति का प्रसार दृश्य, संगीत, फिल्म और अनुवाद के द्वारा हो रहा है इसके लिए संगठित प्रयास होना चाहिए।

जयतु विश्व हिंदी सम्मेलनम्।

-डॉ. दिलीप कुमार मेधि, गुवाहाटी

11वें विश्व हिंदी सम्मेलन में भाग लेकर मुझे बहुत अच्छा लगा। देशभर के हिंदी प्रेमियों से मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ। बहुत ही सुंदर भव्य आयोजन हुआ। हिंदी का उज्ज्वल भविष्य दिखाई देता है। मॉरीशस सरकार का हिंदी के प्रति अपार प्रेम देखा। भारत और मॉरीशस सरकार की तरह और देशों की सरकार भी अगर हिंदी के प्रति ऐसा प्रेम रखेगी तो निश्चित रूप से हिंदी विश्व की सर्वप्रथम भाषा बन जायेगी। कोशिश अवश्य जारी रखनी होगी। यह सम्मेलन सभी दृष्टियों से परिपूर्ण रहा। यह सम्मेलन आने वाले दिन में और अधिक महत्वपूर्ण बनता चला जायेगा, मेरी उम्मीद है। जयतु हिंदी, जयतु विश्व हिंदी सम्मेलनम्।

पूर्व के सम्मेलनों का विस्तार है 11वां विश्व हिंदी सम्मेलन

-डॉ. के.एम. मालती, केरल की लेखिका

विश्व हिंदी सम्मेलन में आये प्रतिभागियों की संख्या हमें उत्साहित करती है। मॉरीशस को देखने का भी मौका है लेकिन गंभीर चर्चा हो रही है। हमारी अपेक्षा है कि स्थानीय अनुकूलता के अनुसार पाठ्य सामग्री बनाने की योजना को कार्यरूप देना होगा। सांस्कृतिक समन्वय की व्यापक कोशिशों के साथ शिक्षण कार्य करना चाहिए। हमारे सामने चुनौती है कि नए उपकरण के साथ हिंदी किस प्रकार सामंजस्य बना सकती है। 11वां विश्व हिंदी सम्मेलन पूर्व के सम्मेलनों का विस्तार है। आज हिंदी बाजार की भाषा बन रही है। हिंदी निरंतर बदलती रही है। हिंदी की प्रकृति उदार है। हमें सचेत रहने की आवश्यकता है। अंग्रेजी शब्द के बदले हिंदी के शब्द लाएं या स्वीकार करें। संख्या बल के साथ हिंदी का स्वाभिमान और आत्मविश्वास बढ़ाने की दिशा में काम किया जाना चाहिए। अंग्रेजी के मायावी आतंक के प्रति सचेत हस्तक्षेप करने की जरूरत है। हिंदी बोलते हुए हम गर्व का अनुभव करें।

भारतीय संस्कृति के प्रति रुचि बढ़ेगी

- डॉ. उमेश कुमार सिंह, हिंदी पीठ, मॉरीशस

मॉरीशस में 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन के आयोजन से यहाँ की युवा पीढ़ी में हिंदी और संस्कृति को बढ़ावा मिलेगा। इसके साथ-साथ नए रचनाकार तैयार होंगे। इस देश में भारतीय संस्कृति और हिंदी भाषा के पठन और लेखन के प्रति उनकी रुचि प्रगाढ़ होगी। यह आयोजन मात्र हिंदी सम्मेलन नहीं, बल्कि इसके द्वारा सांस्कृतिक संबंध और यहाँ की जनता और भारत की जनता से जुड़ने का अवसर है। यह बहुत ही आवश्यक है क्योंकि जब तक हम जुड़ते नहीं तब तक भारतीय संस्कृति, भाषा, समाज के प्रति दृष्टिकोण बदलता नहीं है। इस देश में आज जो भाषा और संस्कृति है वह पूर्व में आयोजित दो विश्व हिंदी सम्मेलनों की देन कही जा सकती है। इस तरह के आयोजन निश्चित रूप से गिरमिटिया देशों में होने चाहिए ताकि हिंदी का वैश्विक रूप और बढ़े।

लक्ष्यप्राप्ति की ओर विश्व हिंदी सम्मेलन

प्रो. धीरेंद्र पाल सिंह

(अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग)

हिंदी को वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठापित करना विश्व हिंदी सम्मेलन की संकल्पना रही है। विश्व हिंदी सम्मेलन अपने उद्देश्यों की तरफ निरंतर आगे बढ़ रहा है। 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन में देश-विदेश के प्रतिभागियों की संख्या में भी वृद्धि देखी गई। हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने के प्रयासों में तेजी आ रही है। सम्मेलन में भारत की विदेश मंत्री समेत कई केंद्रीय मंत्रियों व बंगाल व गोवा के राज्यपालों की सक्रिय सहभागिता से भारत सरकार की हिंदी के प्रति प्रतिबद्धता का पता चलता है। इस सम्मेलन का मुख्य विषय हिंदी विश्व और भारतीय संस्कृति रखा जाना कई दृष्टियों से तात्पर्यपूर्ण रहा। विभिन्न सत्रों में विमर्श के बाद जो सुझाव व अनुशंसाएं आई हैं उनके अनुपालन की दिशा में प्रयास होंगे यह उम्मीद लाजिमी है। हिंदी माध्यम से उच्च शिक्षा के अद्यतन पाठ्यक्रमों एवं पाठ सामग्री के निर्माण व तदनुसार शिक्षकों के प्रशिक्षण की समुचित पर भी ध्यान देना होगा।

प्रासंगिक सम्मेलन

-प्रो. कुमुद शर्मा, दिल्ली

भूमण्डलीकरण का एक ही नारा है। संपूर्ण विश्व संस्कृति एक हो। लेकिन हमारी हिंदी भाषा में अत्यंत संभावनाएँ हैं। हिंदी की लंबी यात्रा है जो अनेक संकटों एवं चुनौतियों से होकर गुजरी है। हिंदी में कई ऐसे नायक हुए जिन्होंने हिंदी के संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। 11वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन पहले हुए हिंदी सम्मेलनों की एक कड़ी है जिसने हिंदी को विस्तार देते हुए उसके साथ भाषा संस्कृति एवं साहित्य को भी शामिल किया है। इस दृष्टि से यह अत्यंत प्रासंगिक है। यह हिंदी के वैश्विक प्रसार का संकेत है। विश्व के कई विश्वविद्यालयों में हिंदी के पाठ्यक्रम चल रहे हैं। पहले हिंदी को भारतीय भाषा एवं संस्कृति को समझने के लिये पढ़ा जाता था, परंतु अब हिंदी विश्व की आर्थिक व्यवस्था में भी शामिल हो चुकी है। अनेक बहुतराष्ट्रीय कंपनियाँ हिंदी भाषा को अपने काम काज की भाषा बना रही हैं। जैसे जैसे भारत आर्थिक शक्ति बनके उभरेगा वैसे वैसे हिंदी भी समृद्ध होगी। हिंदी का प्रवाह एक नदी की तरह है। इसने हर भाषा अरबी पारसी, अंग्रेजी कई बोलियों मैथिली, मगही, भोजपुरी से स्वयं को समृद्ध किया है।

उद्देश्य बड़ा

-डॉ. विद्याबिंदु सिंह, लखनऊ

विश्व हिंदी सम्मेलन का उद्देश्य बहुत बड़ा है। इस सम्मेलन से कई अपेक्षाएँ थीं, परंतु कई बार यह महसूस हो रहा है कि अभी कई तैयारियों की आवश्यकता है। हम हिंदी भाषियों को भी आत्म मंथन की जरूरत है। हिंदी के प्रति हमारे मन में हिंदी की अस्मिता को लेकर आत्म गौरव का बोध होना चाहिए वो उतना नहीं हो पा रहा है। हमारे अपने घरों में ही हिंदी उपेक्षित है। हम हिंदी विश्व की कल्पना तो कर रहे हैं, पर व्यवहार में उससे दूर होते जा रहे हैं। हिंदी के प्रति हमें बहुत खुली दृष्टि रखने की आवश्यकता है।

भव्य आयोजन

-रश्मि रामधोनी, मॉरीशस

यह भव्य आयोजन मॉरीशसवासियों के लिए बहुत चुनौतिपूर्ण रहा परंतु अपने प्रयत्नों से उसे आयोजित किया। यह एक छोटा सा देश है। संसाधन सीमित है इसलिए 2000 अतिथियों का आतिथ्य को संभालते हुए हमें अत्यंत खुशी हो रही है।

डॉ. उदयनारायण गंगू की पुस्तक का लोकार्पण

गोस्वामी तुलसीदास नगर, 19 अगस्त। 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन के मौके पर मॉरीशस के वरिष्ठ हिंदी साहित्यकार डॉ. उदयनारायण गंगू की पुस्तक मॉरीशस में आर्यसमाज : उद्भव और विकास का लोकार्पण हुआ। इस पुस्तक में डॉ. गंगू ने पहले अध्याय में मॉरीशस के संक्षिप्त इतिहास, दूसरे अध्याय में आर्यसमाज की स्थापना और उसके मन्तव्य, तीसरे अध्याय में मॉरीशस में आर्य समाज, चौथे में आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य परोपकारिणी सभा एवं आर्यसभा के उपलब्ध लिखित विवरण, छठे में मॉरीशस

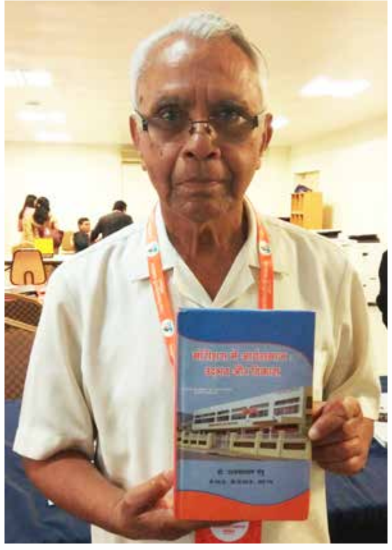

स्वतंत्रतापूर्व काल के धर्मोपदेशक, सातवाँ अध्याय स्वतंत्रता पूर्व काल के समाज-सेवक, आठवें में आर्य सभा के शाखा-समाज, नवें में आर्य सभा के कार्यकलाप का विवरण दिया है। डॉ. गंगू ने हिंदी और अंग्रेजी में डेढ़ दर्जन किताबें लिखी हैं। उनका जन्म 1943 में दक्षिण मॉरीशस में हुआ। संप्रति वह महात्मा गांधी संस्थान में संकायाध्यक्ष हैं।

मुद्रक: काते प्रिंटिंग लि., मॉरीशस

प्रकाशक: विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस

संपादक: प्रो. विनोद कुमार मिश्र

संपादन-सहयोग: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र), भारत